IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

हिमांशु जोशी की कथा साहित्य में नारी पात्र और सामाजिक परिवेश

[1]Dr. Seema Kumari

[1]Teacher (Intermediate School)

[1]Sri Krishna High School

भारतीय समाज में पुरूष के अभाव में स्त्री और स्त्री के अभाव में पुरूष को अपूर्ण माना गया है। स्त्रियों द्वारा हिन्दू जीवन के सिद्धांतों का पुर्नपरीक्षण आज हिन्दू समाज के लिए सबसे बड़ी चुनौती है। सामाजिक परिवेश अंतर्गत मानव कार्य शैली से जुड़ी कई ईकाईयह जैसे वर्ण, परिवार, विवाह, ग्रामीण और नगरीय समुदाय, शिक्षा, स्वास्थ्य, धर्म, कला, संस्कृति इत्यादि है जिसमें नारियों की मुख्य भूमिका है। जब पूराने मूल्य विघटित एवं नये मूल्य स्थापित हो रहे हो तो साहित्य जाति और पंथ की गंध से दूर रहकर व्यवस्था की खामियों को उजागर कर मानववाद की सर्जना में विश्वास करता है। उपभोक्तवादी प्रवृति में सभी नैतिक मूल्यो का विला जाना आधुनिक युग की देन है । समाजिकता के रूढि.वादी विकृतियों का निराकरण कर समाज में व्याप्त वैसभ्य को समाप्त कर सामाजिक नवीनता प्रदान करना समाजिक चेतना का महत्वपूर्ण अंग है। आधुनिक हिन्दी साहित्य में इन बदलते मूल्यों को बखूबी देखा जा सकता है।

समाज व्यक्तियों के समुदाय से बना है जिसमें स्त्री-पुरूष दोनों की समान भागीदारी है। समाज में स्त्रियों की स्थिति के निर्धारण में इस बात का भी महत्व है कि उन्हें कौन-कोन से अधिकार प्राप्त हैं। विभिन्न क्षेत्रों में उनके कार्य तथा भूमिकाएँ क्या होनी चाहिए ? यों तो भारतीय समाज में नारियों की स्थिति विशेषतः हिन्दू समाज में काफी उच्च रही है। दुर्गा, सरस्वती और लक्ष्मी के रूप में उनकी पूजा होती रही है। भारतीय समाज में पुरूष के अभाव में स्त्री को और स्त्री के अभाव में पुरूष को अपूर्ण माना गया है। वर्तमान समय में स्त्रियों के पारिवारिक अधिकारों में वृद्धि हुई है। वर्तमान में स्त्रियहं संयुक्त परिवार के बंधनों से मुक्त होकर एकांकी या मूल परिवारों में रहना चाहती है। शिक्षा व्यवसाय में वे आगे बढ. रही हैं किन्तु अभी भी ग्रामीण और नगरीय क्षेत्रों में अब भी अधिकांश स्त्रियाँ सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक जीवन में पूरी तरह भाग नही ले रही हैं। अतः ''स्त्रियों द्वारा हिन्दू जीवन के सिद्धांतों का पुनर्परीक्षण आज हिन्दू समाज के लिए सबसे बड़ी चुनौती है।''[1]

समाज के अंतर्गत कई ईकाइयहं हैं जो मानव कार्य शैली से जुड़ी हैं जैसे वर्ण, परिवार, विवाह, ग्रामीण और नगरीय समुदाय, शिक्षा, स्वास्थ्य, धर्म, कला, संस्कृति इत्यादि। ये सभी सामाजिक परिवेश के अंतर्गत है जिसमें नारियों की मुख्य भुमिका रहती है। हिमांशु जोशी के उपन्यासों और कहानियों के विचार के क्रम में सामाजिक परिवेश में नारियों की स्थिति परखने की आवश्यकता है।

शहरी एवं ग्रामीण पात्रः

हिमांशु जोशी के कथा साहित्य में शहरी और ग्राम चित्र का यथा तथ्य चित्रण हुआ है। कलाकार छोटा हो या बड़ा, पर आदमी के चित्रण में वह खुद भी आम आदमी बन जाता है। साधारण- असाधारण को महत्व देते हुए। जग-जीवन के संघर्ष में रूचि लेने वाले लेखक अपनी जगह बना ही लेता है। हिमांशु जोशी ऐसे ही कथाकार हैं जो आम आदमी की राह चलते हैं। प्रकाश मन ठीक ही तो कहते हैं ''साधारण आदमी, जिनमें छोटी-छोटी कमजोरियां भी थीं लेकिन उनमें अपनी छोटी-छोटी सामर्थ्य से कुछ कर गुजरने का माद्या था। ऐसे आम आदमी ने साहित्य की परम्परा में एक बड़ी जगह बनाई।''[२]

साहित्य मानववाद की अवधारणा से जुड़ा है। जाति और पंथ की गंध से साहित्य दूर रहता है, वह तो व्यवस्था की खामियों को उजागर कर मानववाद की सर्जना में विश्वास करता है। आज पुराने मूल्य विघटित हो रहे हैं नये मूल्य स्थापित हो रहे हैं। शहरों में आबादी बढ़ती जा रही है और गहृव सारे खाली होते जा रहे है। ग्रामीण संस्कृति खतरे में पड़ रही है। ''गहृव शिक्षित और अशिक्षित दोनों तरह के युवाओं से खाली होने लगे। परिवार का विघटन तेजी से होने लगा। एकल परिवार की अवधारणा को बल मिला। स्त्रियों का शिक्षा, राजनीति, सामाजिक कार्यों एवं नौकरियों में प्रवेश होने लगे।''[३] वस्तुतः ''उपभोक्तवादी प्रवृति में सभी नैतिक मूल्यों का बिला जाना आधुनिक युग की देन है। आधुनिक हिन्दी साहित्य में इन बदलते मूल्यों को बखूबी देखा जा सकता है।''[४]

जोशी जी की कहानियों में भी आधुनिक युग के स्वर उभरते हैं। दुरूख-सुख, हँसना-रूदन, इच्छा-अनिच्छा, सब कुछ देखने को मिलती है। चाहे 'सजा' कहानी की भावना या 'सिंदूरी सच' में होटल में काम करने वाली होटल मालिक की रखैल हो। 'ऐसा क्यों होता है' के सभी नारी पात्र शहरों के रस्मों-रिवाज में ढली दिखती है। 'शहर की परछाई' की सुजाता, 'उस का सच' कहानी की रत्नम शहरी पात्र हैं और इनकी लिप्साएँ कम नहीं हैं। 'एक समुद्र' की वासु, 'जीना-मरना' का बरखा, जया, 'भेड़िये' की सुमन नन्दिता, मिसेज उपाध्याय महानगरों में रहती हैं। 'अनचाहे' कहानी में गुड्डों की महृं रहती शहर में है लेकिन अर्थाभाव के कारण देहाती रहन-सहन है। 'एक पारमिता' में पारमिता, 'हंसा' की मुख्य पात्रा हंसा 'अंधेरे' में खिलानंद बाबू की पत्नी, 'अथाह' की मालती मिन्नी शहरी दफ्तर में टाईपिस्ट की नौकरी करती है। 'परिणति' में विश्तता, जुबेदी 'यामिनी' की यामिनी शहर की रहने वाली है। 'नई बात' में गोविंदी और केतकी गहृंव से आकर दिल्ली शहर में बस जाती। सुनन्दा लक-दक से क्लब जाया करती है। 'खिलौने' की मालिनी 'दंसित' की कनु और 'अस्मिता' की अस्मिता पूर्ण श्हरी हैं। 'गंधर्व-गाथा' की मनियन शहर में रहकर रिसर्च करती है। 'संबंध' की उगो 'सफेद सपने' 'बुंद-पानी' और 'सिमटा हुआ दुरूख' की नारियां भी शहरी हैं। 'किनारे के लोग' की एक अनाम महिला जो छोटे शहर की है 'किसी एक शहर में' और 'झुका हुआ आकाश' के नारी पात्र शहरी हैं। 'चील' कहानी में मिस बिन्द्रा सरकारी दफ्तर में क्लर्क का काम करती है। नाव पर बैठे हुए' में सुधा ईना 'अहसास' की अनाम स्त्री 'आदमियों के जंगल में' की शकुंत, 'इस बार बर्फ गिरी' की बूढ़ी अम्मा 'वह' की हरफनमौला युवती 'इसबार' की अतिमा, 'सागर' तट के शहर' की बहिरा, से सभी शहरी स्त्रियहृं हैं। कुछ उदाहरण ग्रामीण नारी पात्रों के भी देखे जा सकते हैं। 'मनुष्य-चिन्ह' में गोविंदी, 'अतंतरू' में वृद्धा विधवा' विनया है उसके पास झोपड़ी के शिवा कुछ नहीं है। 'काला दरिया' की नारी पात्रा कुकृत्य की शिकार होती है। जलते हुए डैने' की सीमा भाभी और 'तर्पण' की मधुली को गहृंव वाले मदद नहीं करते। 'काला धुअहृं' की एक औरत जो पति और गहृंव वालों की यात्नाओं की शिकार रहती है। 'कांक्षा' में कांक्षा की महृं, 'कटी हुई किरणें' की रजियानी 'अंतहीन' की काकी, 'अगला यथार्थ' की विधवा काकी, ये सभी गहृंव में रहने वाली है।

उपर्युक्त नारी पात्रों के अतिरिक्त भी अनेक कहानियहृं हैं जो आगे विभिन्न संदर्भों में विवेचित हैं। जहहृं तक उपन्यासों का सवाल है उनमें भी शहरी और ग्रामीण नारी पात्र हैं जैसे 'सु-राज' की ढुल बोज्यू होते हुए भी समझदार ग्रामीण अनपढ़ स्त्री है। 'कगार के आग' की गोमती भी ग्रामीण है परिवार के सदस्यों द्वारा अनाचार सहती रहती है। 'छाया मत छुना मन' की वसुधा है तो ग्रामीणपर

बाद में शहर आ जाती है। 'तुम्हारे लिये' उपन्यास की कावेरी ग्रामीण पात्रा है जो मामा के घर रहती है। 'अरण्य' उपन्यास की अनुमेहा और मिसेज दत्ता पूर्ण शहरी स्त्री है। 'महासागर' की नीना निकोबारी आदिवासी लड़की है। 'समय साक्षी है' की मिस माखेजनी मेघना, गोदावरी और गर्विता सभी शहरी स्त्रियह है।

विवाह संबंध (बहु-विवाह, बाल दृविवाह, विवाह-विच्छेद, अनमेल विवाह, विधवा समस्या):

विवाह एक सामाजिक समझौता है जिसे तोड़ने का अधिकार न पति को है न पत्नी को फिर भी विवाह टूटते है संबंध विच्छेद होते है। आधुनिक नवचेतना ने परंपराओं, रूढ़ियों को ध्वस्त कर नई चेतना का द्वारा खोल दिया है। यहहं स्त्री-पुरष अपनी अस्मिता की लड़ाई लड़ते हुए नई प्रतिष्ठा कायम करना चाहते हैं। 'समाज में व्याप्त वैषम्य को समाप्त करने का अभियान तथा उसके साथ सामाजिकता के रूढ़िवादी विकास के कारण उत्पन्न विकृतियों के निराकरण द्वारा समाज को नवीन स्वरूप प्रदान करना सामाजिक चेतना का महत्वपूर्ण अंग है।''[5] ''पहले मनुष्य के विचार बदलते है, फिर धीरे-धीरे इसका प्रभाव समाज पर पड़ता है और इस प्रकार से सामाजिक दृष्टिकोण का निर्माण होता है''[6]

समाज में अच्छाई भी है और बुराई भी। अनेक कुरूतियों तथा कुप्रथाओं के कारण सामाजिक कठिनाईयहं बढ़ जाती है और इसका परिणाम सबसे अधिक स्त्रियों को भुगतना पड़ता है।

वैध्व्य:

समाज में विधवा नारियों की खास मजबूरी है। स्त्री विधवा क्या हुई, समाज उसे अपमानित और प्रताड़ित करने से नही चुकते है। यदि आर्थिक विपन्नता हुई तो जीना और मुहाल हो जाता है। 'अरण्य' उपन्यास में ह्दय राम के स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पत्नी वृधावस्था को झेलती है। पुत्र मानिक दद्दा जुआरी और शराबी रहता है। गहना-जेवर भी बेच डालता है फिर एक दिन घर छोड़कर भी भाग जाता है। विधवा बुढ़ी के पास खेत की कोराई और बुवाई के भी पैसे नही बचते। रूखाल बोज्यू भी विधवा जीवन जीती है। वस्त्राभाव में वह सिमटी रहती, अभाव में तड़पती, असमय ही सूख कर वृद्धासमान लगने लगती है। 'कगार की आग' उपन्यास की गोमती की महहं भी विधवा जीवन जीती है। दीनता ऐसी की झोपड़ी की किवार भी टूटी हुई है। उसी तरह 'सु-राज' में बड़ी विधवा बहु के लिए छोटे भाई नंदू द्वारा घर में उसका हिस्सा न देना अन्याय सा लगता है। ससुर गुँगी को अपनी बहूँ पर तरस आती है। नंदू के प्रति ह्दय में क्षोभ पीड़ा उत्पन्न होते है तथा अनेक आशंकाएँ उसके ह्दय में हलचल पैदा करती है, वह कहता है। ''इतनी लंबी पहाड़'' जैसी जिंदगी पड़ी है इसे तू कैसे गुजारेगी इन भूतों के बीच ?''[7]

हिंमांशु जोशी की कहानियों में भी विधवा समस्या उजागर हुई है। 'काला दरिया' की उदुली 14 वर्ष में विधवा हो जाती है उसके वैधव्य जीवन का परिवार तथा समाज के लोगों द्वारा शारिरीक-मानसिक दोहन किया जाता है। उसका जीवन जीने लायक भी नहीं रह जाता। ''चौदह की उमर से वैधव्य के दस साल उसने देवर-जेठ के जूठे बर्त्तन मांजने में, चौका-चाकरी करने में लगा दिए।''[8] एक दिन उसे मारकर भगा दिया जता है, कुछ लोगों द्वारा देह शोषण कर कोठे की राह उसे पहुँचा दी जाती है। 'अगला यथार्थ' कहानी की दादी साहसी और धैर्यवती है। स्वाधीनता आंदोलन में दादी के पति को काला पानी की सजा हो जाती है वे कभी वापस नही आते। दादी अपने वैधव्य जीवन में दादा जी को नित्य याद करती है। अंग्रेजों की निष्ठुरता को जी भर कोसती है तथा प्रतिकार भी करती है। देश का शोषण करने वालों से वे घृणा करती हैं। दादी इस रूप में एक सशक्त नारी चरित्र है। उनमें अंग्रेंजो के विरूद्ध गजब की चिंगारी जल रही थी। ''जिस जनता का पेट और जबान छीन ली गयी थी उस पर राज करने वाले कथित महान राजवंशों, ठेकेदारों, नवाबों ने बेशर्मी से कुछ हजार फिरंगियों के सामने घुटने टेककर देश के सांस्कृतिक स्वाभिमान को धूल चटा दी थी। लेकिन

शोषित, दमित और निरंतर दलित बनायी जा रही जाति के पास प्रतिरोध की चिंगारी भी ऋषि की आग की तरह थी।''[9] 'तर्पण' में मधुलि को ब्राह्मण और गहृंव वाले कम परेशान नहीं करते उसे कुलक्षिनी तक कह देते।

अनमेल विवाहः

''कहानी की दुनिया में अनेक ऐसी तब्दीलियां आ रही हैं जो दलित और स्त्री अस्मिता की अभिव्यक्ति के साथ नई वैश्विक सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था में निर्मित हो रहे यथार्थ को एक भिन्न परिप्रेक्ष्य में देखने की मांग करते है। पर, सवाल फिर वही है कि नया सामाजिक यथार्थ क्या है जिसे पकड़ने की कोशिश आज की हिंदी कहानी में दिखाई पड़ रही है।''[10] कहानी हो या उपन्यास समाज का यथार्थ चित्र आज उसमें उतारा जा रहा है। एक प्रकार से कथा-साहित्य समाज की सच्ची प्रतिकृति के रूप में में उभर रहा है। समाज में अनमेल विवाह का चित्रण एक सच्चा दस्तावेज है।

निर्धनता के कारण ही युवतियों का विवाह बूढ़े-अधेड़ से कर दिया जाता है। 'अरण्य' उपन्यास की कावेरी का विवाह एक बूढ़े से तय कर दिया जाता है। वे कई विवाह कर चुके थे। कावेरी को दूसरे का वस्त्र पहनाकर वर पक्ष को दिखाने मेला में ले जाया जाता है। कावेरी होने वाले पति को देख कर अचंभित रह जाती है। ''झूर्रियों से ढ़का चेहरा, भौंह के बाल तक सफेद एक भी काला खूँटा कहीं नहीं। दुर्बल तन सिकुड़ी खाल, हड्डियों से लड़-झगड़कर अलग छिटकती हुई।''[11] इस अनमेल विवाह का दुष्परिणाम यह होता है कि सुन्दर कावेरी गहना जेवर अच्छा वस्त्र तो पहनती है परन्तु वह दुखी रहती है। बाहर से हँसती पर भीतर से रेत बनी रहती । दो सौतों के बीच कहंटे की जिंदगी वह जीती है।

'कगार की आग' में लाचार विवश गोमती एक सहारे के लिए खुशाल के पास पहुँच जाती है, वह उसकी तीसरी पत्नी बन जाती है। गोमती तो युवती रहती पर खुशाल की उम्र पैंतालिस पार कर चुकी होती है। खुशाल के पास आकर भी गोमती अपने पति और बच्चे के लिए बेचैन रहती है।

तलाक एवं पारिवारिक उपेक्षाः

समाज में तलाक और पत्नी को घर से निकाले, जाने की समस्या आज भी बनी हुई है। कहीं-कहीं तो दहेज की भी समस्या मुँह बाए खड़ी है। यहहं तक की परिवार के सदस्यों द्वारा उपेक्षित और प्रताड़ित भी किया जाता है। वस्तुतः ''आर्थिक असमानता ने समाज में उच्च मध्य और निम्न वर्गों को जन्म दिया। निम्न और उच्च वर्गों के बीच व्यापक विषमता ने निम्न वर्ग को उच्च वर्ग के विरूद्ध संघर्षरत किया।''[12]

'सजा' कहानी की भावना अपने नहियर में इसलिए रहने लगती है क्योंकि उसके पति ने उसे छोड़ दिया। परित्यक्ता जीवन वह जीती है। 'किनारे के लोग' में एक अनाम महिला जो अपनी अकेली टी0वी0 से पीड़ित बच्ची के स्वास्थ्य के लिए आबो-हवा बदलने नैनीताल पहुँचती है। हिम्मत और साहस से वह जीवन तो जीती है, लेकिन सात फेरे लेने वाला पति उससे किस कदर मुकर जाता है यह सोचकर उसे बड़ा दुख होता है।

परम्परावादी आदर्श संस्कार पारिवारिक विघटन वृद्ध महिलाओं की समस्या, गृहास्थिक दायित्व (आदर्श गृहिणी):

''यदि साहित्य में मुक्ति का बोध समता बोध ओर विराट से जुड़ने का बोध नहीं होता तो उसे हम क्यों पढ़ना चाहेंगे ? जिस रचना में ये बोध जगाने की जितनी अधिक क्षमता होगी, वह उतनी अधिक सुंदर रचना होगी। सौंदर्य व्यक्ति निरपेक्ष कल्पना नहीं है। महात्मा बुद्ध का यह कथन सही लगता है कि यहां कुछ भी सुंदर-असुन्दर नहीं है। सुंदरता और असुंदरता का भाव बोध हमारे चित्र को प्रतिबिंबित करता है।''[13] हिमांशु जोशी ने अपने कथा साहित्य में सुंदर-असुंदर सभी भावों-प्रतिमान को यथा स्थान चित्रित किया।

भारत में आरंभकाल से ही मर्यादा तथा संस्कार का पालन होता आया है। कहानी-उपन्यासों में परम्परावादी स्वरूप वाली नारी पात्रा तो है ही बल्कि परम्परा और नूतनता में टकराहट के कारण ही पारिवार विघटित भी होता है।

परिवार में महिलाएँ अपने गृहास्थिक दायित्व का प्रतिशत निर्वाह करती है उसके वगैर परिवार का चलना कठिन होता है। पर वृद्धाओं की स्थिति बड़ा ही दैयनीय रहती है। जोशी जी के कथा-साहित्य में वृद्धाओं की स्थिति सहज देखी जा सकती है।

वृद्ध महिलाओं की स्थिति समाज या परिवार में बहुत अच्छी स्थिति में नजर नहीं आती। उसका कारण वृद्धाएँ स्वयं भी रही हैं। पारम्परिक सोच उसे ज्यादा संकट में डालती है। 'नंगे पहृंव के निशान' कहानी में डिकरदेव की पत्नी किसी सड्यंत्र के तहत अन्य पुरूष से संबंध बना लेने के उपरान्त गर्भवती हो जाती है। इस पर उसकी वृद्ध सास उसकी जान लेने पर इसलिए उतारू हो जाती है कि उसका बूढ़ा पति लाज-शर्म से फहृंसी लगा कर मर जाता है। अंततः बुढ़िया खूब मार खिलवाती है। फिर एक रात अंधेरे में घर से बहुत दूर बियावान में उसे छोड़ देती है। वह बेटे से कहती है- ''हाथों में रस्सी बहृंध कर किसी चट्टान से लुढ़का दे, नदी में बहा दे या जंगल में गढ़ूढा खोद कर पत्थर से दबा दे .....काट-काट कर टूकड़े-टूकड़े कर के गिरा दे.....बद्जात कहीं की।''[14]

अंततः कहानी में बिनियहृं वृद्ध विधवा महिला है। ये कहानी एक गहृंव की दीन-हीन विधवा की है। ग्रामीण चित्रण में हिमांशु जोशी की प्रायरू सभी कहानियहृं खरी उतरी है। ''जहहृं तक गहृंव की कहानियों का सवाल है हिन्दी में ग्राम जीवन पर अच्छी कहानियां उस अनुपात में प्रायः नहीं आती जिस अनुपात में भारत के गांवों में रहता है। इस संदर्भ में रामविलास शर्मा कहते हैं ''भारत में यथार्थवादी लेखन करने के लिए किसानों के जीवन का जीवंत चित्रण जरूरी है।''[15] उपर्युक्त कहानी मार्मिक एवं जीवंत है। बिनियां के पास रहने के लिए मात्र एक झोपड़ी है खाने को कुछ नहीं। किसी तरह दूसरे के खेत में मजदूरी करती है। बिरजुआ उसका एकमात्र बेटा है जो विक्षिप्त रहा करता है वह भी उसके आगे चल बसता है। एक बार अचेत बिरजू के लिए उसका गला भर आता है ''हमरे लगे पहृंच पूत नहीं, एको तूही है रे, तू ही। सब तोर है। यदि गुदड़ी कम्बल जौन चाहत है, ले जाओ.....।[16]

'हंसा' में अवनिन्दू अपनी पत्नी हंसा को अल्ट्रामाडर्न बनाना चाहता है। उसका केश कटवाने पर हंसा कहती है कि भारतीय परम्परा और मर्यादा पर आघात है ''उन्होंने जिद करके उसके नागिन से लहराते केश कटवा दिए तब वह एकांत में बहुत दिनों तक मुँह छिपाए रोती रही। पति के जीते जी यों बाल कटवाना उसे अपशकुन लगा, पर चुप रही।''[17] सचमुच मध्यवर्ग सुविधाभोगी तथा दिखावटीपन में ज्यादा विश्वास करता है। ''यह वृति स्वार्थ भावना पैदा करती है और मनुष्य के जीवन में जड़त्व आ जाता है। अपनी अपूर्णता का ज्ञान रहने पर भी वह इसी स्थिति में जीना चाहता है सुविधाओं को छोड़े बिना वह पूर्णता की प्राप्ति करना चाहता है।''[18]

'अस्मिता' में भी अस्मिता अपने शराबी पति को झेलती है, पर भारतीय नारी परम्परा को नहीं भूलती। वह घर-गृहस्थी की परम्परा का भी निर्वाह करती है। 'झुका हुआ आकाश' में मृणमयी अपने लापरवाह देवर पर बड़ा ख्याल करती है। उसे बीड़ी पीने की लत है। नंग-धरंग घूमता रहता है। मृणमयी भाभी उसे समझाती है। यह सही है कि समझदार महिला यदि घर की हो तो वह बिगड़े हुए को सही रास्ते पर ला सकती है। 'अंतहीन' कहानी में बूढ़ी भाभी यानी रूद्रिया की काकी अपेक्षाकृत वृद्धा हो गई है। उसके कपड़े-लत्ते भी पुराने तथा मैले हैं। अभाव ग्रस्तता तो है ही, लेकिन सगे-संबंधियों से मिलना उसका शगुल है। उसका जीवन गतिशील जीवन है। ''गतिशीलों को सफलताएं मिली हैं और पाषाणवत् जड़ बनकर जो बैठे रहे उनको निस्तब्धता नीरसता, निराश के अतिरिक्त और कुछ मिला नहीं।''[19] बुढ़िया के पारिवारिक और कौटम्बिक अनुकरणीय हैं। इस प्रकार के प्रेम ''परिवार से लेकर समाज तक फैले होते है और इनका महत्व भी कुछ कम नहीं है। यहहृं ध्यान देने योग्य तथ्य यह भी है कि पारिवारिक प्रेम का विस्तार ही सामाजिक और राष्ट्रीय प्रेम में होता है।''[20]

'इस बार बर्फ गिरी तो' कहानी में बूढ़ी अम्मा जिसका पति गुजर चुका है। रोग शैय्या पर पड़ी रहती है। जब पेंशन लाने का समय नजदीक आता है बेटा, पतहू, पोता-पोती सब खातिर शुरू कर देते हैं। पेंशन आ जाने के बाद फिर कोई पूछने वाला नहीं है। उसकी खातिर महीना में चार-पहंच दिन ही हुआ करती है, शेष दिन वह किसी प्रकार जीती रहती है। फिर भी बूढ़ी उदार हृदय रखती है वह सोचती है कि पेंशन के पैसे से बाल-बच्चों की जिन्दगी सुधर जाए। पोते बड़े होकर अपने पहंव खड़े हो जाए। इस बूढ़ी के आदर्श तो गजब के है। निम्नवर्ग स्थिति में होते हुए भी इसकी सोच निम्न नहीं है। यह कहना युक्तिसंगत है कि ''आदर्शवाद सामाजिक स्थिति के आधार पर अलग-अलग हो सकता है। अभिजात्य वर्ग का आदर्श वही नहीं होगा, जो मध्यवर्ग का होगा और मध्यवर्ग का आदर्श वही नहीं होगा जो निम्न वर्ग का या मजदूर वर्ग का होगा। एक ब्राह्मण का आदर्श और एक शूद्र का आदर्श अलग-अलग हो सकता है। एक राष्ट्रवादी और एक देशभक्त का आदर्श अलग-अलग हो सकता है''[21]

संदर्भ-सूचीः

१. एम०एल० गुप्ता : भारतीय सामाजिक संस्थाएँ, साहित्य भवन, आगरा, १९९० पृ ११२

डी०डी० शर्मा

२. प्रकाश मनु : 'आजकल', मई-२०० पृ ३७

३. राम विनय शर्मा : 'वर्ग चेतना के संदर्भ', 'आजकल' अप्रैल १९८८, पृ ३५

४. दामोदर पांडेय : 'आधुनिक हिन्दी साहित्य रू 'बदलते मूल्य' 'आजकल' जनवरी २००६, पृ ७

५. अर्चना जैन : प्रेमचन्द के निबंध साहित्य में सामाजिक चेतना, इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, सं १९७९, पृ १७

६. डहृ महेशचन्द्र चौरसिया :'सामाजिक परिवर्तन एवं मूल्य रू रिसर्च रिफ्रेंश टवस छव. १ दिस. २००७, पृ ६५

७. सु-राज : पृ० ३०

८. काला दरिया : अंततरू तथा अन्य कहानियां, पृ० ३८

९. जीवन सिंह ठाकुर : 'कथादेश', नवम्बर दृ २०००, पृ०-७४

१०. देवेन्द्र चौबे : 'नए समाज का यथार्थ और कहानी की दुनिया' 'आजकल', मई - २००५, पृ० ४१

११. अरण्य : पृ० सं० ११३

१२. डहृ कमला गुप्ता : 'हिन्दी उपन्यासों में सामान्तवाद' पृ०-३६८-६९

१३. मस्तराम कपूर : साहित्यिक मूल्यों पर पुनर्दृष्टि, 'आजकल' मई २००५, ७०

१४. नंगे पहंव के निशान : मनुष्य चिन्ह,' पृ०- ५८

१५. बलराम : 'समकालीन हिन्दी कहानी समय और समाज', 'आजकल', मई २००५, पृ- ८३

१६. अंततरू : 'अंततः तथा अन्य कहानियहं, पृ २९

१७. हंसा : अंततः तथा अन्य कहानियहं, पृ० २९

१८. डहं आलोक गुप्ता : 'मुक्तिबोध : युगचेतना और अभिव्यक्ति, गिरनार प्रकाशन, पिलालीगंज, मेहसाना, १९८५, पृ० १४९

१९. श्री राम शर्मा : अखण्डज्योति : मई २००६, पृ० १९

२०. डहृ० हरीश कुमार शर्मा : 'कबीरा यह प्रेम का' वर्तमान साहित्य, फरवरी, २००७,पृ० ४६

२१. कंवल भारती : 'दलित साहित्य की अवधारणा, रामपुर (उ०प्र०) २००६, पृ ७१